



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (1)  
PART II—Section 3—Sub-section (1)  
प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 564]  
No. 564]

नई दिल्ली, शुक्रवार, अक्टूबर 27, 1989/कार्तिक 5, 1911  
NEW DELHI, FRIDAY, OCTOBER 27, 1989/KARTIKA 5, 1911

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके  
Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
separate compilation

पर्यावरण और वन मंत्रालय  
(पर्यावरण वन और वन्यजीव विभाग)  
अधिसूचना

नई दिल्ली, 27 अक्टूबर, 1989

सा.का.नि. 931 (अ) :— केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण)  
अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की धारा 6 और 25 द्वारा प्रदत्त  
शक्तियों का प्रयोग करते हुए, पर्यावरण (संरक्षण) नियम, 1986 में  
और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है अर्थात् :—

1. (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम पर्यावरण (संरक्षण) दूसरा  
संशोधन नियम, 1989 है ।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे ।

2. पर्यावरण (संरक्षण) नियम 1986 (जिन्हें इसमें इसके पश्चात  
मूल नियम कहा गया है) के नियम 2 में :—

(i) खंड (क) के पश्चात निम्नलिखित खंड अंतःस्थापित किया  
जाएगा अर्थात् :—

(कक) "क्षेत्र" से वे सभी क्षेत्र अभिप्रेत हैं जहां परिसंकटमय पदार्थों  
की उठाई-धराई की जाती है, " ;

(ii) खंड (ङ) के पश्चात निम्नलिखित खंड स्थापित किया जाये  
अर्थात् :—

"(ङङ) "प्रतिषिद्ध पदार्थ" से वह पदार्थ अभिप्रेत है जिसे उठाई-धराई  
के लिए प्रतिषिद्ध किया गया है " ;

(iii) खंड (च) के पश्चात निम्नलिखित खंड अंतःस्थापित किया  
जायगा, अर्थात् :—

"(चच), निर्बंधित पदार्थ" से वह पदार्थ अभिप्रेत है जिसकी उठाई-  
धराई को निर्बंधित किया गया है ; " ।

3. मूल नियमों में नियम 12 के पश्चात निम्नलिखित अंतः स्थापित  
किया जायेगा, अर्थात् :—

"13 विभिन्न क्षेत्रों में परिसंकटमय पदार्थों की उठाई-धराई पर  
प्रतिषिद्ध तथा निर्बंधन :—

(1) विभिन्न क्षेत्रों में परिसंकटमय पदार्थों की उठाई-धराई पर प्रति-  
षेध या निर्बंधन लगाते समय केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित कारकों पर विचार  
कर सकेगी :—

(i) पदार्थ को परिसंकटमय प्रकृति (जहाँ तक हो सके गुणात्मक तथा मात्रात्मक रूप में) उसके पर्यावरण, मानव, अन्य प्राणियों, वनस्पतियों तथा मत्स्य को नुकसान कारित करने वाले क्षय के अनुसार;

(ii) प्रतिषेध या निर्बंधन किए जाने वाले प्रस्तावित पदार्थों के लिए विकल्प के रूप में वह पदार्थ जो सहज मुल्य हो या जिसके सहज मुल्य होने की सम्भावना हो;

(iii) देशी विकल्प की उपलब्धता या एक सुरक्षित विकल्प तैयार करने के लिए देश में उपलब्ध प्रौद्योगिकी की स्थिति;

(iv) प्रसंगिक परिसंकटमय पदार्थ पर पूर्ण प्रतिषेध लगाने के उद्देश्य से धीरे-धीरे एक नया विकल्प तैयार करने के लिए आवश्यक शोधन अधि, तथा

(v) कोई अन्य कारक जिसे केन्द्रीय सरकार पर्यावरण-संरक्षण के लिए संलग्न समझे।

(2) किसी क्षेत्र में परिसंकटमय पदार्थों की उठाई-धराई जिसमें उनका आयात तथा निर्यात भी शामिल है पर प्रतिषेध या निर्बंधन लगाने समय केन्द्रीय सरकार इसमें इसके पश्चात् अधिकतम प्रतियोगिता का अनुसरण करेगी—

(i) जब केन्द्रीय सरकार को ऐसा प्रतीत हो कि किसी क्षेत्र में परिसंकटमय पदार्थों की उठाई-धराई पर प्रतिषेध या निर्बंधन लगाना समीचीन है तो वह राजपत्र में अधिसूचना के द्वारा तथा ऐसी किसी अन्य रीति से जैसा कि केन्द्रीय सरकार समय-समय पर आवश्यक समझे, अपने ऐसा करने के आदेश की सूचना दे सकेगी।

(ii) खंड (i) के अधीन प्रत्येक अधिसूचना में परिसंकटमय पदार्थों का संक्षिप्त विवरण तथा भौगोलिक क्षेत्र या उस क्षेत्र का जिससे अधिसूचना का संबंध है तथा उस क्षेत्र में ऐसे परिसंकटमय पदार्थों की उठाई-धराई पर प्रतिषेध या निर्बंधन लगाने के कारणों का उल्लेख होगा।

(iii) खंड (i) के अधीन अधिसूचित परिसंकटमय पदार्थों की उठाई-धराई पर प्रतिषेध या निर्बंधन अधिरोपित करने के विरुद्ध आक्षेप फाँल करने का हस्तक्षेप व्यक्ति अधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से तीन दिन के भीतर केन्द्रीय सरकार को लिखित में देकर ऐसा कर सकेगा।

(v) अधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से पाठ दिन के भीतर केन्द्रीय सरकार ऐसी अधिसूचना के विरुद्ध प्राप्ति सभी आक्षेपों पर निर्धार करेगी और किसी क्षेत्र में परिसंकटमय पदार्थों की उठाई-धराई पर प्रतिषेध या निर्बंधन अधिरोपित कर सकेगी।

[फा. सं. 1-4/84-पी. / एच. एस. जी.]

डा. जी. सुन्दरम् सयुक्त. सचिव

मूल नियम तारीख 19 नवम्बर 1986 के का.आ. संख्या 844

(प्र) के अधीन प्रकाशित किए गए। संशोधनकारी का.आ. संख्या 82 (प्र) तारीख 16 फरवरी 1987, का.आ. 39; (प्र), तारीख 16 अप्रैल, 1987, का.आ. 443 (प्र) तारीख 28 अप्रैल, 1987, का.आ. 64 (प्र), तारीख 13 जनवरी, 1988, का.आ. नि. 919 (प्र), तारीख 12 सितम्बर 1988 तथा का.आ. 8 (प्र) तारीख 3 जनवरी, 1989 के अधीन प्रकाशित किए गए।

## MINISTRY OF ENVIRONMENT & FORESTS

(Department of Environment, Forests and Wildlife)

New Delhi, October 27, 1989

### NOTIFICATION

G.S.R. 931 (E). - In exercise of the powers conferred by sections 6 and 25 of the Environment (Protection) Act, 1986

29 of 1986), the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Environment (Protection) Rules, 1986, namely:—

1. (1) These rules may be called the Environment (Protection) Second Amendment Rules, 1989.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Environment (Protection) Rules, 1986 (hereinafter referred to as the principal rules), in rule 2,—

(i) after clause (a), the following clause shall be inserted, namely:—

“(aa) “areas” means all areas where the hazardous substances are handled;”;

(ii) after clause (c), the following clause shall be inserted, namely:—

“(ce) “prohibited substance” means the substance prohibited for handling;”.

(iii) after clause (f), the following clause shall be inserted, namely:—

“(ff) “restricted substance” means the substance restricted for handling;”.

3. In the principal rules, after rule 12, the following rule shall be inserted, namely:—

“13, Prohibition and restriction on the handling of hazardous substances in different areas:—

(1) The Central Government may take into consideration the following factors while prohibiting or restricting the handling of hazardous substances in different areas:

(i) The hazardous nature of the substance (either in qualitative or quantitative terms as far as may be in terms of its damage causing potential to the environment, human beings, other living creatures, plants and property;

(ii) the substances that may be or likely to be or readily available as substitutes for the substances proposed to be prohibited or restricted;

(iii) the indigenous availability of the substitute, or the state of technology available in the country for developing a safe substitute;

(iv) the gestation period that may be necessary for gradual introduction of a new substitute with a view to bringing about a total prohibition of the hazardous substance in question; and

(v) any other factor as may be considered by the Central Government to be relevant to the protection of environment.

(2) While prohibiting or restricting the handling of hazardous substances in an area including their imports and exports the Central Government shall follow the procedure hereinafter laid down:—

(i) Whenever it appears to the Central Government that it is expedient to impose prohibition or restriction on the handling of hazardous substances in an area, it may, by notification in the Official Gazette and in such other manner as the Central Government may deem necessary from time to time, give notice of its intention to do so.

- (ii) Every notification under clause (i) shall give a brief description of the hazardous substances and the geographical region or the area to which such notification pertains and also specify the reasons for the imposition of prohibition or restriction on the handling of such hazardous substances in that region or area.
- (iii) Any person interested in filing an objection against the imposition of prohibition or restrictions on the handling of hazardous substances as notified under clause (i) may do so in writing to the Central Government within thirty days from the date of publication of the notification in the Official Gazette.

- (iv) The Central Government shall within a period of sixty days from the date of publication of the notification in the Official Gazette consider all the objections received against such notification and may impose prohibition or restrictions on the handling of hazardous substances in a region or an area."

[No. 1-48/86-PL/HSMD]

DR. G. SUNDARAM, Jt. Secy.

Principal rules published vide S.O. No. 844(E) dt. 19th Nov. 1986. Amending rules published vide S.O. 82 (E) date 16th Feb. 87; S.O. 393(E) dt. 16 April 1987; S.O. 443(E) dt. 28 Apr. 1987; S.O. 64 (E) dt. 18th Jan 1988, GSR 919(E) dt. 12 Sept 1988 and S.O. 8 (E) dt. 3 Jan 1989.

